# बच्चों और किशोरों के लिए रूचिकर प्रेरणादायक साहित्य

इनसे वह संस्कार मिलेंगे जो जीवन भर साथ निभाएंगे।
9 पुस्तकें 350₹ (डाक खर्च सहित) प्राप्ति के लिए 7015591564 पर व्हाट्सएप द्वारा सम्पर्क करें।

1आदर्श परिवार 40₹
2मर्यादा पुरुषोत्तम राम 35₹
3 स्वर्ण पथ 35₹
4भारत की अवनति के सात कारण 30₹
5प्रार्थना लोक 70₹
6विद्यार्थियों की दिनचर्या 30₹
7कुछ करो कुछ बनो 40₹
8बाल शिक्षा 25₹
9वैदिक सत्यनारायण कथा 20₹

_____
प्रस्तुत है आदर्श परिवार पुस्तक का एक अंश।

माता निर्माण करनेवाली होती है

माता ही अपने बच्चे का निर्माण करनेवाली होती है। प्राचीन इतिहास में सबसे सुन्दर उदाहरण *मदालसा* देवी का है। *मदालसा* के तीन पुत्र हुए। उनके नाम रखे गये—विक्रान्त, सुबाहु और अरिदमन। माता उन्हें लोरी देती हुई कहती—

*शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि निरञ्जनोऽसि*
*संसारमायापरिवर्जितोऽसि ।*
*संसारमायां त्यज मोहनिद्रां*
*मदालसोल्लपमुवाच पुत्रम्।।*
*भावार्थ*— _हे पुत्र !तू शुद्ध है, बुद्ध है, निरंजन=निर्दोष है, संसार की माया से रहित है। इस संसार की माया को त्याग दे। उठ, खड़ा हो, मोह को परे हटा। इस प्रकार मदालसा ने अपने पुत्र से कहा।

शुद्धोऽसि रे तात न तेऽस्ति नाम
कृतम् हि यत् कल्पनयाधुनैव।

भावार्थ: हे प्रिय पुत्र! तू शुद्ध स्वरूप आत्मा है परन्तु तेरा नाम (विक्रांत, सुबाहु, अरिमर्दन) शुद्ध नहीं है बल्कि ये आजकल की कल्पनाओं के आधार पर रखा गया है।

इस शिक्षा का परिणाम क्या हुआ? तीनों पुत्र राज-पाट का मोह त्यागकर वनों को चले गये। यह स्थिति देख महाराज ने कहा—देवी! राज-पाट कौन सम्भालेगा, क्या सबको सन्यासी बना देगी? जब चौथा पुत्र उत्पन्न हुआ तब मदालसा ने उसका नाम रखा—अलर्क। माता ने उसे राजनीति का उपदेश दिया। उसे लोरी देते हुए माता कहती थी—

*धन्योऽसि रे यो वसुधामशत्रु-*
*रेकश्चिरं पालयिताऽसि पुत्र !*
*तत्पालनादस्तु सुखोपभोगो*
*धर्मात् फलं प्राप्स्यसि चामरत्वम् ।।*
—मार्कण्डेयपुराण २६।३५

_हे पुत्र! तू धन्य है जो अकेला ही शत्रुओं से रहित होकर इस पृथिवी का पालन कर रहा है। धर्मपूर्वक प्रजापालन से तुझे इस लोक में सुख और मरने पर मोक्ष की प्राप्ति होगी।_
राज्य की उत्तम व्यवस्था का उपदेश देते हुए वह कहती—

*राज्यं कुर्वन् सुहृदो नन्दयेथा:*
*साधून् रक्षंस्तात !यज्ञैर्यजेथा: ।*
*दुष्टान्निघ्नन् वैरिणश्चाजिमध्ये*
*गोविप्रार्थे वत्स !मृत्युं व्रजेथा: ।।*
—मा० पु० २६।४१

_हे पुत्र !तू राज्य करते हुए अपने मित्रों को आनन्दित करना, साधुओं=श्रेष्ठ पुरुषों की रक्षा करते हुए खूब यज्ञ करना। गौ और ब्राह्मणों की रक्षा के लिए संग्राम-भूमि में शत्रुओं को मौत के घाट उतारता हुआ तू स्वयं भी मृत्यु को प्राप्त हो जाना।_

आज माताएँ अपने कर्त्तव्य को भूल चुकी हैं। आज माता और पिताओं को बच्चे को गोद लेने में शर्म आती है। बच्चे नौकरानी अथवा 'आया' की गोद में पलते हैं। परिणामस्वरूप बालकों का सुनिर्माण नहीं हो पाता।

बालकों पर घर के वातावरण, रहन-सहन और आचार-विचार का भी गहरा प्रभाव पड़ता है। जो माता-पिता आदि स्वयं किसी को 'नमस्ते' नहीं करते। जिन परिवारों में माता-पिता देर से उठते हैं वहाँ बच्चे भी देर से उठते हैं। जो पिता बीड़ी, सिगरेट, मद्य-मांस आदि का सेवन करते हैं उनके बच्चे भी इन दुर्गुणों से बच नहीं सकते। इसके विपरीत जिन परिवारों में सन्ध्या और यज्ञ होता है, आसन और प्राणायाम का

अभ्यास होता है उन परिवारों के बच्चों में भी वेसे ही गुण विकसित हो जाते हैं। यदि माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे श्रेष्ठ, सदाचारी और आदर्श नागरिक बनें तो माता-पिता को स्वयं अपने जीवन में परिवर्तन लाना होगा। माता-पिता को अपने आचरण के द्वारा उन्हें शिक्षा देनी होगी।

अपने बच्चों को सदाचारी, सभ्य और श्रेष्ठ बच्चों की संगति में रखना चाहिए, दुराचारी, असभ्य और गुणहीन बच्चों की संगति से अपने बच्चों को दूर रक्खें।

[ “आदर्श परिवार” पुस्तक से ]